

**नौसेनाध्यक्ष** पुं. (तत्.) नौ सेना का सबसे बड़ा अधिकारी जिसकी देखरेख में नौ सेना का क्रिया-कलाप संपन्न होता है।

**नौसेनापति** पुं. (तत्.) दे. नौसेनाध्यक्ष।

**नौसैनिक** पुं. (तत्.) नौसेना में रहकर युद्ध करने वाला सिपाही वि. नौ-सेना-संबंधी या नौ सेना का जैसे- नौसैनिक-आयोजन।

**न्यग्रोध** पुं. (तत्.) 1. दे. वट-वृक्ष, बरगद का पेड़ 2. लंबाई की एक विशिष्ट नाप, दोनों हाथों को फैलाने पर एक हाथ के सिरे से दूसरे हाथ के सिरे तक का विस्तार, व्याम, पुरसा जैसे-न्यग्रोध-परिणाम का मंडल वि. यह लंबाई व्यक्ति की लंबाई के बराबर होती है।

**न्यस्त** वि. (तत्.) 1. फेंका हुआ 2. रखा हुआ, धरा हुआ 3. बैठाया या जमाया हुआ, स्थापित 4. चुनकर रखा हुआ या सजाया हुआ 5. चलाया हुआ या फेंका हुआ (अस्त्र) 6. त्यागा हुआ, परित्यक्त 7. न्यास अथवा धरोहर के रूप में रखा हुआ 8. छिपा हुआ, दबा हुआ, निहित 9. किसी विशेष कार्य के लिए अलग निकालकर रखा गया।

**न्यस्तशस्त्र** वि. (तत्.) 1. जिसने हथियार रख दिए हो 2. जिसके पास सुरक्षा के लिए कोई हथियार न हो, अस्त्रहीन, निरस्त्र, निःशस्त्र 3. जिससे हानि की आशंका न हो।

**न्यस्य** वि. (तत्.) न्यास के योग्य 1. धरोहर के रूप में रखे जाने योग्य 2. चलाए जाने अथवा छोड़े जाने योग्य (अस्त्र-शस्त्र) 3. संभालकर रखने योग्य।

**न्याना** वि. (तत्.) 1. अबोध, नासमझ 2. कम अवस्था (आयु) वाला।

**न्याय** पुं. (तत्.) 1. पद्धति, रीति 2. उपयुक्तता, औचित्य प्रशा., विधि नियम, विधि, कानून 3. नियमानुसार व्यवहार या उचित व्यवहार 5. विधि. विधिगत/कानूनी कार्यवाही 6. विधि. विधिकानून के अनुसार दंड यथा अपराधी को न्याय अवश्य मिलना चाहिए 7. समानता, सादृश्य 8. ईमानदारी जैसे- न्याय के अनुसार धन बाँटना चाहिए 9. संस्कृत प्रसिद्धनीति-वाक्य 10. प्रसिद्धलोकोक्ति

जो दृष्टांत-वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है 11. भारतीय छह दर्शनों में से एक दर्शन न्याय-दर्शन 12. तर्कशास्त्र (लॉजिक) पाँच अवयवों (प्रतिज्ञान, हेतु, उदाहरण, उपनय तथा निगमन) से युक्त तर्क वि. 1. उचित, ठीक 2. तुल्य, समान।

**न्यायकर्ता** वि. (तत्.) विवाद आदि की स्थिति में उचित फैसला या निपटारा करने वाला।

**न्यायज्ञ** पुं. (तत्.) न्याय-शास्त्र का ज्ञाता।

**न्यायतः** क्रि.वि. (तत्.) न्याय के अनुसार, न्यायपूर्वक।

**न्याय-दर्शन** पुं. (तत्.) भारत के षड्-दर्शन के अंतर्गत एक अति प्राचीन एवं प्रख्यात दर्शन जिसमें प्रमाणों से वस्तु की परीक्षा करने की पद्धति है तथा पदार्थों का अत्यधिक गहन एवं तात्त्विक चिंतन विद्यमान है, प्रमाणशास्त्र वि. संस्कृत में व्याकरण को पदशास्त्र, मीमांसा को वाक्य शास्त्र तथा न्याय को प्रमाणशास्त्र माना गया है, तीनों शास्त्रों के विद्वान 'पदवाक्य प्रमाणज्ञ' कहे जाते थे।

**न्यायनिर्णयन** पुं. (तत्.) 1. न्यायिक निर्णय सुनाना 2. निष्पक्ष होकर विवाद को अथवा झगड़े को शांत करना।

**न्यायनिर्णायक** वि. (तत्.) प्रशा.राज. 1. न्यायिक निर्णय करने वाला 2. निष्पक्ष होकर विवाद को शांत करने वाला।

**न्यायपर** वि. (तत्.) 1. न्यायसंगत आचरण करने वाला 2. न्याय-परायण 3. न्याय पूर्ण।

**न्यायपरता** स्त्री. (तत्.) 1. न्याय परायण होने की भावना, न्याय परायणता, न्यायशीलता 2. औचित्य 3. ईमानदारी।

**न्यायपरायण** वि. (तत्.) न्यायपूर्वक आचरण करने वाला, न्यायशील।

**न्याय-पालिका** स्त्री. (तत्.) लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली में सरकार के तीन आधारभूत अंगों में से एक जो राज्य की न्याय-व्यवस्था संभालता है टि. राज्यव्यवस्था के तीन अंग हैं- कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं विधायिका।